आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:10/12/2022; Published:31/01/2023

सीता

डॉ. आशा रब्ब

मूल:डॉ. कविता एस. कुसुगल (कन्नड)

वन कुटिया में रहकर

चारों दिशा खोकर भी

खुद को तुम जान सकी

हे सीते

अपनी बेटियों का

तुम बनी हो आज प्रकाशपूँज।

संस्कृति की गिरफ्त में रहकर भी

तुम चली थी स्वाभीमान की चाल

स्त्री कुल के सशक्तिकरण के लिए

जिस रास्ते पर तुम चली थी

वह रास्ता

प्रकाश बन साथ है।

****